Purva Mimaansa
A Multi-discipinary Bi-annual Research Journal
(Peer Reviewed, Refereed)

Vol. 10 No. 1-2, March-Sep. 2019
ISSN : 0976-0237
UGC Approved Journal No. 40903
Impact Factor 3.765

धर्मशास्त्रीय तथा नीतिशास्त्रीय ग्रन्थों में शासक हेतु 'काम' त्याग का निर्देशः

*डॉ॰ सलोनी

वेदसम्मत चारों वर्णों एवं आश्रमों का वर्णन तथा अर्थशास्त्र का भलीभान्ति प्रतिपादन जिसमें किया गया हो, उसे 'स्मृति' कहते हैं। धर्मशास्त्र को परिभाषित करते हुए महर्षि मनु का स्पष्ट कथन है कि वेद को 'श्रुति' एवं धर्मशास्त्र को 'स्मृति' जानना चाहिए। महर्षि मनु अत्रि, विष्णु, हारीत, याज्ञवल्क्य, उशना (शुक्र), अङ्गिरा, यम, आपस्तम्ब, संवर्त, कात्यायन, बृहस्पति, पराशर, व्यास, शंख, लिखित, दक्ष, गौतम, शातातप च वसिष्ठ नामक धर्मशास्त्रकारों का उल्लेख याज्ञवल्क्यस्मृति में प्राप्त होता है।

संस्कृत साहित्य में नीतिग्रन्थों का उद्भव देव-गुरु बृहस्पति एवं दैत्यगुरु शुक्राचार्य से माना जाता है। इन दोनों ने देवताओं एवं दैत्यों को नैतिक मार्ग प्रदर्शन हेतु क्रमशः 'बृहस्पतिनीति' एवं 'शुक्रनीति' नामक गौरवपूर्वक नीतिग्रन्थों का सृजन किया। इन दोनों नीतिशास्त्रों ने लौकिक संस्कृत साहित्य के परवर्ती नीतिग्रन्थों को अनुप्राणित किया है। ऐसे ग्रन्थों की भी एक बड़ी संख्या है, यथा- विदुरनीति, चाणक्यनीति, चाणक्यसूत्र, अर्थशास्त्र, कामन्दकीयनीति, पञ्चतन्त्र, हितोपदेश, नीतिशतक आदि।

नीतिशास्त्र की ऐसी मान्यता है कि जो राजा प्रजा का ठीक प्रकार से पालन नहीं करता, वह (तेल रहित) नपुंसक तिल के समान तुच्छ है। राजा को राज्य-सञ्चालन एवं प्रजानुरञ्जन के लिए स्वयं एक आदर्श स्थापित करना पड़ता है। प्रजा की प्रसन्नता हेतु राजा से अनेक सत्कर्मों का अनुष्ठान तथा दुष्कृत्यों का परित्याग अपेक्षित होता है। संस्कृत नाटककार महाकवि भवभूति का तो कहना है कि राजा को प्रजा की प्रसन्नता के लिए स्नेह, दया, सुख तथा यहां तक कि अपनी पत्नी का त्याग करने में भी किसी तरह का दुःख नहीं होना चाहिए।

धर्मशास्त्रीय तथा नीतिशास्त्रीय ग्रन्थों में भी राजा के त्याज्य कर्मों की विस्तारपूर्वक चर्चा की गई है। धर्मशास्त्र की दृष्टि में मानवीय व्यसन मृत्यु से भी अधिक कष्टकारी होते हैं। 'व्यसन' शब्द की परिभाषा देते हुए आचार्य कौटिल्य का कहना है कि जो कार्य कल्याणकारी मार्ग से भ्रष्ट कर दे अर्थात् जो कार्य राजा को नीचे गिरा दे, वही उसके लिए 'व्यसन' है। 'विदुरनीति' तथा 'श्रीमद्भगवद्गीता' में काम, क्रोध एवं लोभ रूपी व्यसन को नरक अर्थात् दुःखों में प्रवृत्ति के कारण रूपी द्वार मानते हुए इनके त्याग का उपदेश दिया गया है।

धर्मशास्त्रकार महर्षि मनु ने भी लोभ से प्रादुर्भूत होने वाले दस कामजन्य तथा आठ क्रोधजन्य व्यसनों को लोभ के सहित त्यागने की बात कही है। मृगया, जुआ, दिन में सोना, पराये

असिस्टैण्ट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर।

Vol. 10 No. 1-2, March-Sep. 2019
ISSN : 0976-0237
UGC Approved Journal No. 40903
Impact Factor 3.765

की निन्दा, स्त्री में अत्यासक्ति, मद (मद्यपानादि), नाचने व गाने में अत्यासक्ति तथा व्यर्थ भ्रमण की गणना कामजन्य व्यसनों तथा चुगलखोरी, दुस्साहस, द्रोह, ईर्ष्या, असूया, अर्थदोष, कठोर वचन तथा कठोर दण्ड की गणना क्रोधजन्य व्यसनों में महर्षि मनु ने की है। धर्मशास्त्रानुसार कामजन्य व्यसनों में आसक्त राजा अर्थ एवं धर्म से भ्रष्ट हो जाता है व क्रोधजन्य व्यसनों में आसक्त राजा आत्मा से ही भ्रष्ट हो जाता है।

इसी बात का समर्थन करते हुए नीतिशास्त्र में भी राजा के द्वारा त्याज्य सात दोषों की चर्चा की गई है—कामुकता, जुआ खेलना, शिकार खेलना, शराब पीना, कटु वचन बोलना, अत्यन्त कठोर दण्ड देना व धन का दुरुपयोग। ये सभी दोष दुःखदायक एवं विनाशक हैं। नीतिशास्त्र में इन व्यसनों तथा उनसे उत्पन्न होने वाले दोषों का निरूपण किया गया है। आचार्य कौटिल्य ने कोप से उत्पन्न होने वाले तीन दोष स्वीकार करते हुए उन्हें 'त्रिवर्ग' की संज्ञा प्रदान की है तथा उनकी दृष्टि में काम से चार प्रकार के दोष उत्पन्न होते हैं, जिन्हें 'चतुर्वर्ग' कहा गया है। कोप से उत्पन्न होने वाले त्रिवर्ग में वाक्पारुष्य, अर्थदूषण व दण्डपारुष्य की गणना की गई है, जबकि मृगया, द्यूत, स्त्री तथा मदिरापान को काम से प्रादुर्भूत माना गया है।

आचार्य कौटिल्य के मतानुसार काम एवं क्रोध, दोनों ही दुर्जनों के सत्कार के हेतु तथा सज्जनों के तिरस्कार के हेतु होते हैं। दोषों की अधिकता के कारण काम एवं क्रोध को महान् व्यसन माना गया है। इसलिए धैर्यशाली, वृद्धसेवी एवं जितेन्द्रिय राजा को चाहिए कि वह प्राणनाशक एवं दुःखोत्पादक काम एवं क्रोध का सर्वथा परित्याग कर दे। साथ ही राजा को जुआ एवं शिकार न खेलने का भी निर्देश दिया गया है।

अन्य नीतिशास्त्रीय ग्रन्थों में भी राजा के व्यसनों में मद्यपान, परस्त्री का संग, आखेट, जुआ, अन्याय से परधन हरण व धन का दुरुपयोग, वचन एवं दण्ड में कठोरता की गणना की गई है। इनके वशीभूत होकर राजा विनष्ट हो जाता है। नीतिशास्त्रानुसार सुख की इच्छा रखने वाले राजा को कामुकता, क्रोध, मोह (अज्ञान), लालच, प्रतिष्ठा एवं अभिमान रूपी छः मनोविकारों का परित्याग कर देना चाहिए। किस-किस व्यसन के वशीभूत होकर किस-किस राजा का नाश हुआ, इसका दृष्टान्त देते हुए नीतिशास्त्र का कथन है कि कामुकता के कारण राजा दण्डक, क्रोधवश जनमेजय, लालच के कारण राजर्षि ऐल, मोह के कारण वातापि दैत्य, मान के वशीभूत पुलस्त्यकुल में उत्पन्न राक्षसराज रावण तथा मद के कारण दम्भोद्भव नामक राजाओं का नाश हुआ। इनके विपरीत इन छः व्यसनों को जीतने वाले परशुराम तथा राजा अम्बरीष ने चिरकाल तक इस पृथ्वी का उपभोग किया। ऐसा ही वर्णन आचार्य चाणक्य ने अपने नीतिग्रन्थ 'अर्थशास्त्र' में किया है। नष्ट हुए व्यसनी राजाओं में उन्होंने शुक्राचार्य द्वारा निर्दिष्ट राजाओं के अतिरिक्त राजा कराल, तालजंघ, इला के पुत्र पुरूरवा, राजा अजबिन्दु, दुर्योधन, हैहयराज अर्जुन एवं यादव संघ की भी गणना की है। आचार्य कौटिल्य के अनुसार काम, क्रोधादि दोषों के बढ़ जाने पर राजा की अपनी ही प्रकृतियां कुपित हो जाया करती हैं। इन दोषों को आसुरी वृत्ति कहा गया है। अपनी प्रकृतियों का कोप शत्रु की उन्नति के अवसर पर आपत्ति का रूप धारण कर लेता है,

Vol. 10 No. 1-2, March-Sep. 2019
ISSN : 0976-0237
UGC Approved Journal No. 40903
Impact Factor 3.765

जोकि अर्थ, अनर्थ तथा संशय, इन तीनों रूपों में प्रकट होता है। इसीलिए आचार्य चाणक्य ने काम, क्रोध, लोभ, मान, मद एवं हर्ष के त्याग से राजा को इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करने की बात कही है। नीतिशास्त्र का मानना है कि जो राजा अहंकार, चित्त की जड़ता, निद्रा अथवा आलस्य, मूर्खता, काम अर्थात् इन्द्रियों के विकार, दुष्ट मन्त्रियों एवं मूर्ख दूतों पर विश्वास रूपी छः द्वारों को सावधानीपूर्वक बन्द रखता है, वही धर्म, अर्थ तथा काम का विधिपूर्वक उपभोग करता हुआ शत्रुओं को अपने वशीभूत कर लेता है।

अतः धर्मशास्त्र एवं नीतिशास्त्र दोनों ही राजा के लिए काम, क्रोध, लोभ आदि व्यसनों के त्याग के सम्बन्ध में एकमत हैं।

सरांश

1 वर्णादिधर्म्मस्मरणं यत्र वेदाविरोधकम्।
कीर्त्तनं चार्थशास्त्राणां स्मृतिः सा च प्रकीर्त्तिता।।
शुक्रनीति, 4/3/54.

2 श्रुतिस्तु वेदो विज्ञेयो धर्मशास्त्रं तु वै स्मृतिः।
मनुस्मृति, 2/10.

3 मन्वत्रिविष्णुहारीतयाज्ञवल्क्ययोशनोऽङ्गिराः।
यमापस्तम्बसंवर्ताः कात्यायनबृहस्पती।।
पराशरव्यासशंखलिखिता दक्षगौतमौ।
शातातपो वसिष्ठश्च धर्मशास्त्रप्रयोजकाः।।
याज्ञवल्क्यस्मृति, 1/4-5.

4 ...न प्रजाः पालिताः सम्यक् ते वै षण्ढतिला नृपाः।।
शुक्रनीति, 1/126.

5 स्नेहं दयां च सौख्यं च यदि वा जानकीमपि।
आराधनाय लोकस्य मुञ्चतो नास्ति मे व्यथा।।
उत्तररामचरितम्, 1/12.

6 व्यसनस्य च मृत्योश्च व्यसनं कष्टमुच्यते।
व्यसन्यधोऽधो व्रजति स्वर्गात्यव्यसनी मृतः।।
मनुस्मृति, 7/53.

7 ...व्यस्यत्येनं श्रेयस इति व्यसनम्।। अर्थशास्त्र, 8/127/1, पृ० सं०-555.

8 (i) त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः।
कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत्।।
विदुरनीति, 1/71.

Vol. 10 No. 1-2, March-Sep. 2019
ISSN : 0976-0237
UGC Approved Journal No. 40903
Impact Factor 3.765

(ii) श्रीमद्भगवद्गीता, 16/21.

9 दश कामसमुत्थानि तथाष्टौ क्रोधजानि च।
व्यसनानि दुरन्तानि प्रयत्नेन विवर्जयेत्।।
द्वयोरष्येतयोर्मूलं यं सर्वे कवयो विदुः।
तं यत्नेन जयेल्लोभं तज्जावेतावुभौ गणौ।।
मनुस्मृति, 7/45, 49.

10 मृगयाऽक्षो दिवा स्वप्नः परिवादः स्त्रियो मदः।
तौर्यत्रिकं वृथाट्यां च कामजो दशको गणः।।
पैशुन्यं साहसं द्रोह ईर्ष्यासूयार्थदूषणम्।
वाग्दण्डजं च पारुष्यं क्रोधजोऽपि गणोऽष्टकः।।
वही, 7/47-48.

11 कामजेषु प्रसक्तो हि व्यसनेषु महीपतिः।
वियुज्यतेऽर्थधर्माभ्यां क्रोधजेष्वात्मनैव तु।।
वही, 7/46.

12 सप्त दोषाः सदा राज्ञा हातव्या व्यसनोदयाः।
प्रायशो यैर्विनश्यन्ति कृतमूला अपीश्वरा।।
स्त्रियोऽक्षा मृगया पानं वाक्पारुष्यं च पंचमम्।
महच्च दण्डपारुष्यमर्थदूषणमेव च।।
विदुरनीति, 1/96-97.

13 तानुपदेक्ष्यामः-कोपजस्त्रिवर्गः, कामजश्चतुर्वर्गः।।
अर्थशास्त्र, 8/129/3, पृ० सं०-556.

14 वाक्पारुष्यमर्थदूषणं दण्डपारुष्यमिति।...
वही, 8/129/3, पृ० सं०-567.

15 कामजस्तु-मृगया द्यूतं स्त्रियः पानमिति चतुर्वर्गः।..
वही, 8/129/3, पृ० सं०-568.

16 असतां प्रग्रहः कामः कोपश्चावग्रहः सताम्।
व्यसनं दोषबाहुल्यादत्यन्तमुभयं मतम्।।
तस्मात्कोपं च कामं च व्यसनारम्भमात्मवान्।
परित्यजेन्मूलहरं वृद्धसेवी जितेन्द्रियः।।
वही, 8/129/3, पृ० सं०-572.

Vol. 10 No. 1-2, March-Sep. 2019
ISSN : 0976-0237
UGC Approved Journal No. 40903
Impact Factor 3.765

17 (i) नास्ति कार्यं द्यूतप्रवृत्तस्य।
चाणक्यसूत्र, सूत्र सं०-71.

(ii) मृगयापरस्य धर्मार्थौ विनश्यतः।।
वही, सूत्र सं०-72.

18 (i) सप्त दोषाः सदा राज्ञा हातव्या व्यसनोदयाः।
प्रायशो यैर्विनश्यन्ति कृतमूला अपीश्वरा।।
स्त्रियोऽक्षा मृगया पानं वाक्पारुष्यं च पांचमम्।
महच्च दण्डपारुष्यमर्थदूषणमेव च।।
विदुरनीति, 1/96-97.

(ii) पानं स्त्री मृगया द्यूतमर्थदूषणमेव च।
वाग्दण्डयोश्च पारुष्यं व्यसनानि महीभुजाम्।।
हितोपदेश, 3/115.

19 (i) कामक्रोधस्तथा मोहो लोभो मानो मदस्तथा।
षड्वर्गमुत्सृजेदेनमस्मिस्त्यक्ते सुखी नृपः।।
शुक्रनीति, 1/143.

(ii) परस्त्रीसङ्गमे कामो लोभो नान्यधनेषु च।
स्वप्रजादण्डने क्रोधो नैव धार्यो नृपैः कदा।।
वही, 1/119.

(iii) धनप्राणहरो राजा प्रजायाश्चातिलोभतः।
तस्मादेतत् त्रयं त्यक्त्वा दण्डधारी भवेत् नृपः।।
वही, 4/1/66.

(iv) कामः क्रोधस्तथा मोहो लोभो मानो मदस्तथा।
षड्वर्गमुत्सृजेदेनमस्मिंस्त्यक्ते सुखी नृपः।।
हितोपदेश, 4/95.

20 दण्डको नृपतिः कामात् क्रोधाच्च जनमेजयः।
लोभादैलस्तु राजर्षिर्मोहाद् वातापिरासुरः।।
पौलस्त्यो राक्षसो मानान्मदाद् दम्भोद्भवो नृपः।
प्रयाता निधनं ह्येते शत्रुषड्वर्गमाश्रिताः।।
वही, 1/144-145.

21 शत्रुषड्वर्गमुत्सृज्य जामदग्न्यः प्रतापवान्।
अम्बरीषो महाभागो बुभुजाते चिरं महीम्।।
शुक्रनीति, 1/146.

Vol. 10 No. 1-2, March-Sep. 2019
ISSN : 0976-0237
UGC Approved Journal No. 40903
Impact Factor 3.765

22 शत्रुषड्वर्गमुत्सृज्य जामदग्न्यो जितेन्द्रियः।
अम्बरीषश्च नाभागो बुभुजाते चिरं महीम्।।
अर्थशास्त्र, 1/3/5, पृ० सं०-17.

23 तद्विरुद्धवृत्तिरवश्येन्द्रियश्चातुरन्तोऽपि राजा सद्यो विनश्यति। यथा दाण्डक्यो नाम भोजः कामाद् ब्राह्मणकन्यामभिमन्यमानः सबन्धुराष्ट्रो विननाश। करालश्च वैदेहः। कोपाज्जनमेजयोब्राह्मणेषु विक्रान्तस्तालजङ्घश्च भृगुषु। लोभादैलश्चातुर्वर्ण्यमत्याहारयमाणः सौवीरश्चाजबिन्दुः। मानाद्रावणः परदारानप्रयच्छन्। दुर्योधनो राज्यादंशं च। मदाद् डम्भोद्भवो भूतावमानी हैहयश्चार्जुनः। हर्षाद्वातापिरगस्त्यमत्यासादयन्वृष्णिसंघश्चं द्वैपायनमिति।। एते चान्ये च बहवः शत्रुषड्वर्गमाश्रिताः। सबन्धुराष्ट्रा राजानो विनेशुरजितेन्द्रियाः।।
वही, 1/3/5, पृ० सं०-16-17.

24 कामादिरुत्सेकः स्वाः प्रकृतीः कोपयति, अपनयो बाह्यः। तदुभयमासुरी वृत्तिः। स्वजनविकारः कोपः परवृद्धिहेतुष्वापदर्थोऽनर्थः संशय इति।।
वही, 9/145-146/7, पृ० सं०-625.

25 विद्याविनयहेतुरिन्द्रियजयः कामक्रोधलोभमानमदहर्षत्यागात्कार्यः।
अर्थशास्त्र, 1/3/5, पृ० सं०-16.

26 मदं स्वप्नमविज्ञानमाकारं चात्मसम्भवम्।
दुष्टामात्येषु विश्रम्भं दूताच्चाकुशलादपि।।
द्वाराण्येतानि यो ज्ञात्वा संवृणोति सदा नृप।
त्रिवर्णाचरणे युक्तः स शत्रूनधितिष्ठति।।
विदुरनीति, 7/37-38.